लैलतुल-क़द्र के फज़ाईल व अहकाम

[हिन्दी]

ليلة القدر- فضائل وأحكام

[اللغة الهندية]

लेख

अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह

عطاءالرحمن ضياء الله

المكتب التعاوني للدعوة وتوعية الجاليات بالربوة

الرياض - المملكة العربية السعودية

इस्लामी आमन्त्रण एंव निर्देश कार्यालय रब्वा, रियाज़, सऊदी अरब

1429 -2008

islamhouse.com

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

मैं अति मेहरबान और दयालु अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ।

الحمدلله الذي من علينا بشهر رمضان، والصلاة والسلام على خير من صام واعتكف وقام، نبينا محمد وعلى آله وصحبه وأتباعه على الدوام.

इस उम्मत पर अल्लाह तआला का एक बहुत बड़ा उपकार यह है कि इसे एक ऐसी रात से सम्मानित किया है जो साल भर की रातों में सर्व श्रेष्ठ और महानतम रात है, जिस रात के बारे में अल्लाह तआला ने कुर्आन की एक सूरत उतारी है जिस की रहती दुनिया तक तिलावत होती रहे गी। इस रात का अल्लाह के निकट इतना बड़ा स्थान, महत्त्व और श्रेष्ठता है कि इस रात की इबादत को अल्लाह तआला ने एक हज़ार महीने की इबादत से भी सर्व श्रेष्ठ घोषित किया है। केवल इतना ही नहीं, बल्कि यह रात अत्यन्त शुभ रात है, जिस में अल्लाह के फरिश्ते खैर व भलाई के साथ उतरते हैं।

इस्लामी भाईयो और बहनो ! इस रात का नाम **'लैलतुल-क़द्र'** है। यह रात रमज़ान के अन्तिम दहे की रातों में से कोई एक रात है, जिस के ज्ञान को अल्लाह तआला ने गुप्त रखा है, और इस में अल्लाह की कोई बड़ी हिकमत है और इसी में हमारी भलाई है जैसाकि अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस की ओर संकेत किया है।

इस रात का नाम लैलतुल-क़द्र क्यों है?

इस के दो कारण हैं :

1. साल भर में होने वाली चीज़ों को अल्लाह तआला इस रात में मुक़द्दर करता है। चुनाँचे अल्लाह तआला इस रात में बन्दों की रोज़ियों, जीवन, मृत्यु, संसार की घटनाओं, सौभाग्य, दुर्भाग्य,... को लिखता है और उसे फरिश्तों के हवाले कर देता है। इसे विशेष और वार्षिक तक़्दीर कहते हैं, जबकि सामान्य तक़्दीर आसमान व ज़मीन की उत्पत्ति से पचास हज़ार वर्ष पूर्व लिखी जा चुकी है। इस के बारे में अल्लाह तआला का फर्मान है :

﴿إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةٍ مُبَارَكَةٍ إِنَّا كُنَّا مُنْذِرِينَ فِيهَا يُفْرَقُ كُلُّ أَمْرٍ حَكِيمٍ﴾ (الدخان:٣-٤)

"नि:सन्देह हम ने इसे एक मुबारक रात में उतारा है। नि:सन्देह हम डराने वाले हैं। इस (रात) में हर हिकतम वाले काम का फैसला किया जाता है।"(सूरतुद्दुखानः ३-४)

2. अल्लाह तआला के निकट इस का महान क़द्र अर्थात् बहुत बड़ा स्थान, पद, श्रेष्ठता और प्रतिष्ठा है। इसीलिए अल्लाह तआला ने इस रात को एक हज़ार महीने से भी श्रेष्ठतर घोषित किया है। जिस रात में इबादत करना, एक हज़ार महीने (अर्थात् ८३ वर्ष से भी अधिक) इबादत करने से श्रेष्ठतर और बेहतर है। अल्लाह तआला का कथन है।

﴿ إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةِ الْقَدْرِ وَمَا أَدْرَاكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ ﴾ (القدر:١، ٢)

"निःसन्देह हम ने इसे क़द्र (प्रतिष्ठा) की रात में उतारा है। और आप को किस चीज़ ने सूचना दी कि क़द्र की रात क्या है?" (सूरतुल क़द्र :१-२)

लैलतुल–क़द्र के फज़ईल :

१. इस रात में अल्लाह तआला ने क़ुरआन के उतारने का आरम्भ किया, अल्लाह तआला का फर्मान है:

﴿ إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةِ الْقَدْرِ ﴾ (سورة القدر:١)

"निःसन्देह हम ने इसे क़द्र (प्रतिष्ठा) की रात में उतारा है।" (सूरतुल क़द्र:१)

२. यह एक मुबारक (शुभ) रात है, जैसाकि अल्लाह तआला का फर्मान है:

﴿ إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةٍ مُبَارَكَةٍ ﴾ (سورة الدخان:٣)

"निःसन्देह हम ने इसे एक मुबारक रात में उतारा है।" (सूरतुद्दुखानः ३)

३. इस रात में अल्लाह तआला साल भर में घटित होने वाले मामलों, जीविकाओं तथा जन्म एंव मृत्यु ... को लिखता है। अल्लाह तआला का फर्मान है :

﴿ فِيهَا يُفْرَقُ كُلُّ أَمْرٍ حَكِيمٍ ﴾ (سورة الدخان:٤)

"इस (रात) में हर हिकमत वाले काम का फैसला किया जाता है।" (सूरतुद्दुखानः ४)

४. इस रात में इबादत करने की बहुत बड़ी फज़ीलत है। इस रात की इबादत, अन्य महीनों में (जिस में लैलतुल-क़द्र न हो) एक हज़ार महीने की इबादत से बेहतर और श्रेष्ठ है। जैसाकि अल्लाह तआला का फर्मान है :

﴿ لَيْلَةُ الْقَدْرِ خَيْرٌ مِنْ أَلْفِ شَهْرٍ ﴾ (سورة القدر:٣)

"क़द्र की रात एक हज़ार महीने से अधिक श्रेष्ठ है।" (सूरतुल क़द्र :३)

५. इस रात में अल्लाह के फरिश्ते खैर व बरकत, तथा रहमत व मग़्फिरत के साथ धरती पर उतरते हैं। अल्लाह तआला का कथन है :

﴿ تَنَزَّلُ الْمَلَائِكَةُ وَالرُّوحُ فِيهَا بِإِذْنِ رَبِّهِمْ مِنْ كُلِّ أَمْرٍ ﴾ (سورة القدر:٤)

"इस (रात) में फरिश्ते और रूह (जिब्रील) अपने रब के हुक्म से हर काम के लिए उतरते हैं।" (सूरतुल क़द्र :४)

६. यह रात हर शर्र व बुराई, विपत्ति, और आफत से खाली होती है, इस में इताअत, खैर व भलाई और नेकी के कामों की अधिकता होती है, तथा अज़ाब (प्रकोप व यातना) से बाहुल्य रूप से सुरक्षा होती है। इस रात मैं शैतान का उतना बस नहीं चलता है जितना अन्य रोतों में चलता है। इस प्रकार यह रात सम्पूर्ण रूप से सुरक्षा और शान्ति वाली है। जैसाकि अल्लाह तआला का फर्मान है :

﴿سَلَامٌ هِيَ حَتَّى مَطْلَعِ الْفَجْرِ﴾ (سورة القدر:٥)

"यह रात फज्र के निकलने तक शान्ति वाली होती है।" (सूरतुल क़द्र :५)

७. जो आदमी विश्वास (ईमान) रखते हुए इस रात को अल्लाह की उपासना और आराधना में बिताता है और इस पर अल्लाह से अज्र व सवाब की आशा रखता है, तो उसके पिछले गुनाह माफ कर दिए जाते हैं। जैसाकि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फर्मान है :

"जिसने ईमान के साथ और अज्र व सवाब की आशा रखते हुए लैलतुल क़द्र को क़ियामुल्लैल किया (अर्थात् अल्लाह की इबादत में बिताया) तो उसके पिछले गुनाह क्षमा कर दिए जाएँ गे।" (सहीह बुखारी व मुस्लिम)

इस्लामी भाईयो ! एक ऐसी रात जिसका इस तरह महत्त्व, श्रेष्ठता, विशेषता और प्रतिष्ठा है, हमारे लिए अतियोग्य है कि हम इस रात को खोजें और इस में घोर संघर्ष करें।

लैलतुल–क़द्र कैसे खोजें ?

निःसन्देह लैलतुल-क़द्र रमज़ान के अन्तिम दहे में है। जैसाकि बुखारी व मुस्लिम में आईशा रज़ियल्लाहु अन्हा की हदीस में है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः **"लैलतुल-क़द्र को रमज़ान के अन्तिम दहे में खोजो।"**

बल्कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने लैलतुल क़द्र की खोज में पहले रमज़ान के प्रथम दहे का एतिकाफ किया, फिर मध्य दहे का एतिकाफ किया, फिर आप को अल्लाह की ओर से सूचना दी गई कि लैलतुल क़द्र अन्तिम दहे में है, तो आप ने अन्तिम दहे का एतिकाफ किया और सहाबा को भी इस से अवगत कराते हुए कहा कि जो एतिकाफ करना चाहे वह अन्तिम दहे में करे। (बुखारी व मुस्लिम)

तथा बुखारी व मुस्लिम ही में आईशा रज़ियल्लाहु अन्हा कि एक दूसरी रिवायत में है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः **"लैलतुल-क़द्र को रमज़ान के अन्तिम दहे की ताक़ (विषम) रातों में खोजो।"**

ताक़ (विषम संख्या वाली) रातों के विषय में उलमा के दो दृष्टिकोण हैं :

पहला : महीने की संख्या की ताक़ रातें, इस एतिबार से २१, २३, २५, २७, और २६ वीं रात में से काई एक रात लैलतुल-क़द्र है।

इसकी पुष्टि **बुखारी व मुस्लिम** में अबू सईद खुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु की उस हदीस से होती है जिस में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने लैलतुल क़द्र की यह पहचान बताई थी कि आप उसकी सुब्ह कीचड़ में सज्दा कर रहे हैं। चुनाँचे २१ वीं रात की सुब्ह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कीचड़ में सज्दा किया।

तथा सहीह **मुस्लिम** में अब्दुल्लाह बिन उनैस की हदीस में है कि २३ वीं की सुब्ह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कीचड़ में सज्दा किया।

इसी तरह यह भी प्रमाणित है कि कुछ सहाबा ने सपना देखा कि लैलतुल क़द्र २७ वीं की रात को है।

दूसरा : महीने की शेष रह जाने वाली ताक़ रातें, इस एतिबार से २२, २४, २६, २८ और ३० वीं रात में से कोई एक रात लैलतुल-क़द्र है।

इसका तर्क यह है कि बाक़ी रह जाने वाली रात ताक़ है।

तथा सहीह बुखारी में अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः **"इसे रमज़ान के अन्तिम दहे में खोजो, लैलतुल-क़द्र ६ वीं बाक़ी रह जाने वाली, ७ वीं बाक़ी रह जाने वाली, ५ वीं बाक़ी रह जाने वाली रात में है।"**

तथा अबू बक्रः से रिवायत है कि उन्हों ने अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फर्माते हुए सुना : **"इसे ६ वीं बाक़ी रह जाने वाली रात, या ७ वीं बाक़ी रह जाने वाली रात, या ५ वीं बाक़ी रह जाने वाली रात, या तीसरी बाक़ी रह जाने वाली रात, या अन्तिम रात में तलाश करो।"**

अबू सलिमा कहते हैं कि मैं न अबू सईद से कहा : आप लोग संख्या के बारे में हम से अधिक ज्ञान रखने वाले हैं, उन्हों ने कहा कि हाँ, हम इस के तुम से अधिक योग्य हैं। वह कहते हैं कि मैं ने पूछा : ६ वीं, ७ वीं और और ५ वीं बाक़ी रहने वाली रातें क्या हैं? उन्हों ने उत्तर दिया : जब २१ वीं रात बीत जाए तो उसके बाद २२वीं रात, ६ वीं बाक़ी रह जाने वाली रात है। जब २३ वीं रात बीत जाए तो उसके बाद वाली रात, ७ वीं बाक़ी रहने वाली रात है, तथा जब २५ वीं रात बीत जाए तो उसके बाद वाली रात, ५ वीं शेष रहने वाली रात है।

इसीलिए कुछ उलमा ने कहा है कि लैलतुल क़द्र रमज़ान के अन्तिम दहे कि ताक़ (विषम संख्या वाली) और जुफ्त (सम संख्या वाली) दोनों रातों में हो सकती है।

उपर्युक्त हदीसों को मिलाने से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि लैलतुल क़द्र के समय को कोई नहीं जानता। तथा यह हर साल किसी एक रात में नहीं रहती है, बल्कि अन्तिम दहे की रातों में स्थानान्तिरित होती रहती है। किसी साल २१ वीं को होती है तो किसी साल २३ वीं को, किसी वर्ष २५ वीं को होती है तो किसी वर्ष २७ वीं को, किसी वर्ष २९ वीं को होती है तो किसी वर्ष जुफ्त (सम संख्या वाली अर्थात् २२, या २४, या २६, या २८, या ३० वीं) रात में होती है।

सारांश यह कि अल्लाह तआला ने इस रात के ज्ञान को गुप्त रखा है, ताकि लोग इस के खोज के लिए संघर्ष करें, और इसे पाने के लिए अन्तिम दहे की सभी रातों में जाग कर अल्लाह तआला की इबादत करें। जैसा कि स्वयं नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम किया करते थे।

बल्कि इस रात के गुप्त होने ही में उम्मत की भलाई है, जैसाकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस तथ्य की ओर संकेत किया है। सहीह बुखारी में उबादा बिन सामित रज़ियल्लाहु अन्हु की हदीस से ज्ञात होता है कि अल्लाह तआला ने अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इस रात का ज्ञान प्रदान किया था, और आप सहाबा को इसके बारे में बतलाने जा रहे थे कि आप ने दो आदमियों को क़र्ज़ के बारे में झगड़ते हुए देखा। आप ने उन दोनों को समझाया, फिर सहाबा से सम्बोधित होते हुए फरमाया : **''मैं तुम्हें लैलतुल क़द्र की सूचना देने के लिए निकला, तो फलाँ और फलाँ आपस में झगड़ रहे थे, तो उस का ज्ञान उठा लिया गया। और हो सकता है कि इस में कि तुम्हारे लिए खैर व भलाई हो।''**

निःसन्दे इस में बहुत बड़ी भलाई है कि आदमी इन दसों रातों को जाग कर अल्लाह की इबादत करता है, जिस से उसका अज्र व सवाब बहुत बढ़ जाता है, और जब वह पूरे दहे को जाग कर इबादत करता है तो निश्चित रूप से उसे लैलतुल क़द्र के पाने का सौभाग्य प्राप्त हो जाता है।

लैलतुल क़द्र में आदमी के लिए उचित यह है कि वह अपना अधिकांश समय दुआ में बिताए। सुफ्यान सौरी रहिमहुल्लाह कहते हैं : **''लैलतुल क़द्र में दुआ करना, मेरे निकट नमाज़ पढ़ने से अधिक पसन्दीदा है।''**

तथा आईशा रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं : ''यदि मुझे पता चल जाए कि लैलतुल क़द्र कौन सी रात है, तो उस रात मेरी सब से अधिक यह दुआ होगी : 'ऐ अल्लाह! मैं तुझ से माफी और आफियत (शान्ति) का सवाल करती हूँ।

इस प्रकार लैलतुल क़द्र में दुआा करना, सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम के निकट प्रसिद्ध और प्रचलित था। अतः मुसलमान को इस रात में अधिक से अधिक दुनिया व आखिरत की भलाई के लिए दुआ करना चाहिए। विशेषकर वह दुआ जो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आईशा रज़ियल्लाहु अन्हा को सिखाई थी, जब कि उन्हों ने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा था कि यदि मैं लैलतुल क़द्र

को पा जाऊँ तो क्या दुआ पढ़ूँ? तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हें निम्नलिखित दुआ सिखाई :

((اَللّٰهُمَّ إِنَّكَ عَفُوٌّ تُحِبُّ الْعَفْوَ فَاعْفُ عَنِّيْ))

ऐ अल्लाह ! तू अत्यन्त क्षमा और माफी वाला है, और माफी को पसन्द करता है। अतः तू मुझे क्षमा और माफी प्रदान कर। (तिर्मिज़ी)

इस्लामी भाईयो और बहनो ! इस शुभ अवसर को ग़नीमत समझें, इसमें अधिक से अधिक अल्लाह से अपने लिए और समस्त मुसलमानों के लिए दुआएँ माँगें, गुनाहों से माफी की याचना करें, तथा सत्य कार्य (नेक आमाल) करें। क्योंकि यह जीवन का अवसर है, अवसर सदैव और बार-बार नहीं आता, सम्भव है कि यह आप के जीवन का अन्तिम अवसर हो। इसलिए इसे हाथ से न जाने दें। जो आदमी इस रात की ख़ैर व भलाई से वंचित रह गया, वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कथन के अनुसार बड़ा बदनसीब और अभागा है।

अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जीवन में हमारे लिए सर्व श्रेष्ठ आदर्श है, कि आप इस अन्तिम दहे को किस प्रकार बितात थे, जबकि आप के अगले-पिछले समस्त गुनाह माफ थे। फिर भी आप इस प्रकार इबादत करते थे कि आप के पाँव फट जाते थे।

अल्लाह तआला से दुआ है कि समस्त मुसलमानों को इस शुभ अवसर को गनीमत समझने और इस से लाभान्वित होने की तौफीक़ प्रदान करे। तथा हमें लैलतुल क़द्र की प्राप्ति से सम्मानित करे।

والحمد لله رب العالمين، وصلى الله وسلم على نبينا محمد وعلى آله وصحبه أجمعين.

(अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह)*
*atazia75@gmail.com